शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन

[1]चरत लाल मीना, [2]विवेक मीना

[1]असिस्टेंट प्रोफेसर – गेस्ट फैकल्टी, राजकीय महाविद्यालय, बौंली, सवाई माधोपुर, राजस्थान, भारत

[2]असिस्टेंट प्रोफेसर – गेस्ट फैकल्टी, कंप्यूकम इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नॉलॉजी एंड मैनेजमेंट, जयपुर, राजस्थान

vivekmeena7410@gmail.com

शोध आलेख सार: *इस शोध पत्र में शिक्षा से ही सामाजिक परिवर्तन संभव है, इस बात पर विशेष जोर दिया गया है। शिक्षा के द्वारा ही लोगों की मनोवृतियों में परिवर्तन होता है और इस व्यवहार के लिए शिक्षा ही उन्हें प्रेरित करती है। शिक्षा ही व्यक्ति का मानसिक विकास करती है तथा साथ में सामाजिक चारित्रिक नैतिक तथा सांस्कृतिक ज्ञान का विकास करती है। शिक्षा के द्वारा ही सांस्कृतिक सुधारवादी आंदोलन का जन्म हुआ है। समाज अपनी आवश्यकताओं तथा आदर्श के अनुसार शिक्षा का स्वरूप निर्धारित करता है। शिक्षा द्वारा प्राप्त ज्ञान से लोगों के दृष्टिकोण और विचार बदल जाते हैं इस बदलाव के कारण समाज में परिवर्तन आवश्यक हो जाते हैं। शिक्षा समाज को समय अनुरूप बदलने का एक माध्यम है। शिक्षा के कारण ही लोगों का दृष्टिकोण अंधविश्वास, रूढ़िवाद, पुरुषवाद आदि से हटकर तर्कवाद और प्रगतिवाद की तरफ मोड़ा जा सकता है। शिक्षा से ही बड़े–बड़े परिवर्तनों को देख सकते हैं जो कि परिवार, समुदाय, जाति आदि में हुए हैं। सामाजिक परिवर्तन के लिए शिक्षा बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह व्यक्ति की मानसिक क्षमता को बेहतर बनाने में मदद करती है। जब कोई व्यक्ति शिक्षित हो जाता है, तो उसे इस बात का भान हो जाता है कि उसके लिए क्या उचित है और क्या अनुचित है।*

मुख्य शब्दः शिक्षा, सामाजिक परिवर्तन, व्यवहार, मानव विकास, आधुनिकीकरण आदि ।

Article History

Received: 20/01/2025; Accepted: 26/01/2025; Published: 12/02/2025

ISSN: 3048-717X (Online) | https://takshila.org.in

Corresponding author: चरत लाल मीना, Email ID: charatlalgothwal@gmail.com

प्रस्तावनाः

शिक्षा ही व्यक्ति का मानसिक विकास करती है और मानसिक विकास के साथ–साथ सामाजिक, चारित्रिक, नैतिक तथा सांस्कृतिक ज्ञान का विकास करती है। शिक्षा के द्वारा ज्ञान में वृद्धि तथा प्रौद्योगिकी खोज को बढ़ावा मिलता है। ज्ञान में विश्वास लाने के लिए सामाजिक परिवर्तन और आधुनिकीकरण के लिए

शिक्षा ही आवश्यक है। समाज शिक्षा के माध्यम से परिवर्तनशील है। आधुनिक शिक्षा और समाज में होने वाले परिवर्तन व्यक्ति को इस योग्य बनाते हैं ताकि वह उन संभावनाओं के अनुसार पहले से ही व्यवहार के लिए तैयार रहे जो घटित होने वाला है अतः यह कह सकते हैं कि शिक्षा लोगों की मनोवृतियों में परिवर्तन लाकर उन्हें इस प्रकार के व्यवहार के लिए प्रेरित करती है जो व्यवहार खुले समाज की विशेषता है। अतः मनोवृति में होने वाला यह परिवर्तन आधुनिकीकरण का द्योतक है जो केवल शिक्षा के द्वारा ही संभव हो पता है।

आधुनिक शिक्षा का आधार वैज्ञानिक है जिसमें स्वतंत्रता, समानता तथा मानवतावाद के तत्व शामिल है। नवीन शिक्षा के कारण भारत में सांस्कृतिक सुधारवादी आंदोलनों का जन्म हुआ। समाज अपनी आवश्यकताओं तथा आदर्शों के अनुसार शिक्षा का स्वरूप निर्धारित करता है शिक्षा के साथ समाजशास्त्र एवं शैक्षिक समाजशास्त्र का प्रगाढ़ संबंध है। इसलिए शिक्षा की प्रक्रिया भिन्न–भिन्न समाज द्वारा अपनी आवश्यकताओं एवं आदर्शों को ध्यान में रखकर अपने व्यवहार में बदलाव लाते हैं। विज्ञान के आधुनिकीकरण का समाज पर विशेष प्रभाव रहा है। अतः शिक्षा के द्वारा इस बात पर विशेष बल दिया जाता है कि व्यक्ति की चिंतन शक्ति, तर्क शक्ति व निर्णय शक्ति का विकास पूर्ण रूप से होना चाहिए। ध्यान देने की बात यह है कि वर्तमान समाज के विभिन्न रूप है। अपने–अपने सिद्धांतों तथा आदर्शों के अनुसार प्रत्येक समाज शिक्षा की व्यवस्था करता है। जैसे–जैसे सामाजिक आदर्शों का विकास होता है वैसे ही समाज में परिवर्तन होते रहते हैं जिससे समाज की दशा में सुधार होता है। जिस प्रकार पहले शिक्षा का अधिकार उच्च वर्ग को था और फिर अंग्रेजों के आगमन से लेकर उनके जाने तक समाज के आदर्श व आवश्यकता बदल गए। परिणामस्वरुप अब जाति–पाति, रंग–रूप, लिंग आदि के भेदभाव से ऊपर उठकर प्रत्येक व्यक्ति के लिए शिक्षा प्राप्त करने का समान अधिकार है।

शिक्षा के उद्देश्यः

प्रचलित मान्यताओं और ब्रिटिश दस्तावेजों के अनुसार देशी शिक्षा से तात्पर्य धर्म से प्रभावित शिक्षा से लिया जाता है। क्योंकि प्राचीन काल से धर्म के साथ–साथ वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर आधारित शिक्षा का प्रचलन था। निरूसंदेह कालांतर में वैज्ञानिक दृष्टिकोण सीमित हो गया। तब धर्म ज्ञानार्जन, व्यक्तिगत कल्याण और जीवन यापन के साधन उपलब्ध कराने से शिक्षा प्रेरित थी। भारत में शिक्षण व्यवस्था भी अपने व्यवसाय धर्म और जाति से प्रभावित थी। परिवार ही शिक्षा का प्रमुख केंद्र था। शिक्षा आधुनिकीकरण का एक महत्वपूर्ण कारण है। शिक्षा सामाजिक परिवर्तन में एक उपकरण के रूप में कार्य करती है।

शिक्षा की अनुसंधान प्रणालीः

शिक्षा द्वारा प्राप्त ज्ञान से लोगों के दृष्टिकोण और विचार बदल जाते हैं। इस बदलाव के कारण समाज में परिवर्तन आवश्यक हो जाते हैं। शिक्षा समाज को बदलने का उपकरण है। शिक्षा के कारण ही लोगों का दृष्टिकोण अंधविश्वासों, रूढ़िवादों और आदि से हटकर तर्कवाद, प्रगतिवाद की तरफ है अपने आप मुड़ जाता है ।शिक्षा से ही बड़े–बड़े परिवर्तनों को देख सकते हैं। जो कि परिवार ,समुदाय, जाती आदि में आज तक हुए हैं। आधुनिक शिक्षा में परंपरागत सामाजिक संबंधों का स्वरूप ही बदल दिया गया है। वर्तमान को देखकर कह सकते हैं कि लोकतंत्र शिक्षा प्रणाली और औद्योगिक प्रगति की शुरुआत पश्चिमी देशों से हुई इसके परिणाम स्वरूप जो सामाजिक आर्थिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में परिवर्तन हुए उनसे अन्य देशों ने अनुकरण किया है। इसे ही हम आधुनिकीकरण के रूप में जानते हैं और शिक्षा ही आधुनिकीकरण के विस्तार का माध्यम है।

शिक्षा से ही परिवर्तन संभव है सत्य तो यह है कि समाज में होने वाले परिवर्तन विभिन्न प्रकार के होते हैं। उनकी दिशाएं भी भिन्न–भिन्न होती है। यही कारण है कि अनेक प्रकार के परिवर्तन विभिन्न दिशाओं में होने लगते हैं। इससे समाज में अनेक प्रकार की समस्याएं उत्पन्न होती है। परिवर्तन एक सार्वभौमिक प्रक्रिया है। औद्योगिक क्रांति नगरीकरण जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में नई–नई मशीनों के आविष्कार यातायात और संदेश वाहन की सुविधाओं में अत्यधिक प्रगति से सब जगह दिखाई पड़ता है। राजा–प्रजा, स्त्री–पुरुष, मजदूर–मलिक आदि विभिन्न वर्गों के संबंधों में आपस में परिवर्तन दिखाई पड़ता है। प्रत्येक सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रियाओं के काम करने से नए–नए परिवर्तन होते हैं। जबकि कुछ लोग इन परिवर्तनों को सरलता से अपना लेते है।

विभिन्न सामाजिक कुप्रथाएं एवं सुधार कार्यः

1. सती प्रथाः

Improving Skillset
Takshila Journal of Research

यह प्रथा संपूर्ण भारत के साथ–साथ राजपूताना में भी प्रचलित थी। मध्यकाल में मोहम्मद बिन तुगलक और अकबर ने भी इस प्रथा को रोकने का प्रयास किया। ब्रिटिश काल में सामाजिक और सरकारी दोनों दृष्टि से सती प्रथा को रोकने के प्रयास हुए हैं। राजा राममोहन राय के प्रयास से प्रेरित होकर लॉर्ड विलियम बैंटिक ने 1829 में इस पर कानून बनाकर सती प्रथा को रोकने का प्रयास किया।

2. कन्या वधः

19वीं सदी में भारत इस को प्रथा से अभिशप्त था। कर्नल जेम्स टॉड ने दहेज प्रथा को इसका प्रमुख कारण माना। दहेज और कन्या वध दोनों ही समाज के नासूर थे और एक दूसरे से जुड़े हुए थे। इसे रोकने के लिए अनेक कदम उठाए गए 1888 के बाद कन्या वध की घटनाओं में लगातार कमी आती चली गई।

3. अनमेल या बाल विवाहः

इस प्रकार की कुप्रथाओं को प्रतिबंधित करने के लिए समाज सुधारक दयानंद सरस्वती ने आवाज उठाई और 10 दिसंबर 1903 में इस को प्रथा के निषेध के लिए बनाएँ गए कानून में महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

4. दास प्रथाः

भारत में दास प्रथा प्राचीन काल से अस्तित्व में थी, जो शिक्षा के कारण ही समाप्त हुई थी। शिक्षा के द्वारा इसमें परिवर्तन किया गया और आज यह प्रथा लगभग समाप्त सी हो गई है।

शिक्षा का सामाजिक परिवर्तनों में योगदानः

शिक्षा से आलोचनात्मक सोच विकसित होती है और लोकतांत्रिक मूल्यों को बढ़ावा मिलता है। शिक्षा से समाज में आधुनिक तरीकों के प्रति लोगों का दृष्टिकोण बदलता है। शिक्षा से लोगों में बदलाव की इच्छा पैदा होती है। शिक्षा से लोगों को सामाजिक बुराइयों के बारे में जागरूकता मिलती है। शिक्षा से सामाजिक सुधार के लिए आंदोलन शुरू होते हैं। शिक्षा से रोजगार के अवसर बढ़ाते हैं और सामाजिक आर्थिक स्थिरता में सुधार होता है। शिक्षा से समानता बढ़ती है और असमानता का अंतर कम होता है और लोगों की जीवन स्थितियों सुधरती है। शिक्षा से समाज वंचित दिशाओं में आगे बढ़ता है। शिक्षा सामाजिक परिवर्तन में लोकतांत्रिक मूल्यों को पोषित करती है और आर्थिक विकास को बढ़ाती है। सामाजिक गतिशीलता को बढ़ावा देती है और सांस्कृतिक बदलावों को सुगम बनाती है। शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है, जिससे सामाजिक परिवर्तन संभव है।

Improving Skillset
Takshila Journal of Research

महिला शिक्षाः

दयानंद सरस्वती ने महिला शिक्षा के महत्व को स्वीकारते हुए 'सत्यार्थ प्रकाश' के तीसरे अध्याय में विस्तार से लिखा है। अजमेर में परोपकारिणी सभा की स्थापना की, जिसके माध्यम से शिक्षा का प्रचार कार्य किया गया। गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित शिक्षण संस्थानों में बुनियादी शिक्षा को आधार बनाया गया

जहां महिलाओं को, चरखा निर्माण, चरखा चलाना , खादी का निर्माण, वह उपयोगी कुटीर उद्योग का निर्माण आदि कार्य सिखाए जाते थे जिससे महिलाएं स्वावलंबी बन सके।

प्रारंभ में महिला शिक्षा पाठ्यक्रम के तहत, सिलाई, बुनाई, बच्चे गान जैसे घरेलू कार्यों की शिक्षा तक सीमित था 1875 में 3त अर्थात रीडिंग, राइटिंग, अर्थमैटिक को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया। इस तरह धीरे–धीरे शिक्षा से ही महिला समानता स्थापित हुई तथा महिला स्वावलंबी बनी।

महिलाओं के विकास और अधिकारिता के लिए सकारात्मक आर्थिक एवं सामाजिक नीति के माध्यम से अवसर उपलब्ध कराने हेतु वातावरण तैयार करना। महिलाओं को उनके राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं नागरिक अधिकारों के प्रति जागरूक करना। महिलाओं को शिक्षा उच्च शिक्षा एवं तकनीकी शिक्षा तथा स्वास्थ्य रक्षा और नियोजन के बराबर अवसर उपलब्ध कराना। लैंगिक समानता के लिए वातावरण तैयार करना। यह सभी परिवर्तन शिक्षा के कारण ही संभव हो पाए हैं। इस प्रकार शिक्षा ही एक ऐसी प्रक्रिया है, जो समाज को बदल सकती है। एक नई सोच और एक नया परिवर्तन कर सकती है। जिससे देश के विकास की गति में चार चांद लगा सकती है। शिक्षा के माध्यम से ही हम सभी को जागरुक कर सकते हैं।

निष्कर्षः

सामाजिक परिवर्तन के लिए शिक्षा बहुत महत्वपूर्ण है। यह व्यक्ति की मानसिक क्षमता को बेहतर बनाने में मदद करती है। जब कोई व्यक्ति शिक्षित हो जाता है तो उसे पता चल जाता है कि क्या सही है और क्या गलत हैं। शिक्षा व्यक्ति के सोचने और व्यवहार करने के दृष्टिकोण और जीवन शैली को भी पूरी तरह से बदल देती है। शिक्षा को माध्यम बनाकर समाज में जागरूकता को बढ़ाया जा सकता है। इस तरह से समाज के लोगों को विभिन्न समस्याओं के समाधान के बारे में जागरूकता मिल सकती है। जैसे कि जनसंख्या वृद्धि, बेरोजगारी, स्वच्छता, जल संरक्षण, वातावरण के मुद्दे आदि पर शिक्षा समाज के मन में नए ज्ञान और अनुभव के प्रसार के लिए जिम्मेदार है। हर नया समाज अपने साथ उस प्रतिभा को लेकर आता है, जो सामाजिक प्रगति के लिए नई रचनाओं और नए आविष्कारों में योगदान दे सकती है। शिक्षा से उन प्रतिभाओं के दिमाग को नई रोशनी और नई दिशा देनी चाहिए जिससे नए विचार गतिविधियाँ और नई रचनाएं उभर कर सामने आ सकें।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः

1. एस. के .शर्मा, 2006, आधुनिक भारतीय समाज में शिक्षा।

2. राजस्थान पत्रिका, प्रकाशन, जयपुर।

3. राजस्थान अध्ययन, प्रोफेसर एच.डी .माथुर, आर्थिक प्रशासन व प्रबंधन विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर।

4. स्त्री विमर्श और सामाजिक आंदोलन, डॉ. राज नारायण।

5. नारी के बदले आयाम, डॉ .राजकुमार।

6. दैनिक भास्कर, प्रकाशन जयपुर।

7. भारतीय समाज, वीरेंद्र प्रकाश शर्मा।

8 आर.के. शर्मा, शिक्षा के उद्देश्य ज्ञान एवं पाठ्यचर्या।

Improving Skillset
Takshila Journal of Research